मृदा उर्वरता और शून्य आधारित प्राकृतिक खेती (जेडबीएनएफ) पर प्रशिक्षण की एक रिपोर्ट

तटीय पारिस्थितिकी तंत्र-वन अनुसंधान केंद्र (एफआरसी-सीई), विशाखापत्तनम द्वारा 27.09.2022 मंगलवार को एमपीडीओ हॉल, आनंदपुरम में किसान समुदाय के लिए "मृदा उर्वरता और शून्य-आधारित प्राकृतिक खेती" पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। श्री टी. श्रीनिवास, वैज्ञानिक-बी, एफआरसीसीई प्रभारी प्रमुख, डॉ. इल्हाम बानो, वैज्ञानिक-बी, श्री एस. लक्ष्मण राव, यूडीसी, श्रीमती टी. अनुषा, तकनीशियन और सी.एच. श्रीनिवास सहित निर्देशित त.पा.तं.व.अ.केंद्र समूह ने कार्यक्रम में के भाग लिया। कार्यक्रम की शुरुआत श्री टी. श्रीनिवास द्वारा त.पा.तं.व.अ.केंद्र के परिचय और प्रतिभागियों के साथ अतिथियों का स्वागत करते हुए की गई । श्री बी. विजया प्रसाद, सहायक कृषि निदेशक, भीमिली ने उद्घाटन भाषण दिया। किसानों को संबोधित करते हुए, उन्होंने कहा कि एक कमरे में बैठकर बैठकों में भाग लेने से हमें परिणाम नहीं मिलते हैं, लेकिन प्राकृतिक कृषि तकनीकों का पालन करने का प्रयास करने से निश्चित रूप से देश के प्रत्येक व्यक्ति के स्वास्थ्य की स्थिति में सुधार हो सकता है। उन्होंने यह भी व्यक्त किया कि किसानों द्वारा फसलों को उगाने में रसायनों का उपयोग करने से पोषक उत्पादन कम हो रहा है, जिससे स्पष्ट रूप से प्रतिरक्षा स्तर में कमी आई है जिससे जीवित प्राणियों के बीच महामारी का मार्ग बढ़ गया है। श्री टी. श्रीनिवास द्वारा विशेष अतिथि और मुख्य अतिथि को त.पा.तं.व.अ.केंद्र की ओर से स्मृति चिन्ह भेंट किए गए। एक समूह फोटो और चाय के ब्रेक के बाद, मुख्य अतिथि श्री ए मोहन राव, डीपीएम, कृषि, विशाखापत्तनम द्वारा "जलवायु लचीलापन और प्राकृतिक खेती" पर प्रस्तुति सत्र की शुरुआत की गई।

अपनी प्रस्तुति के दौरान उन्होंने जैविक खेती के लक्ष्यों, प्राथमिक सिद्धांतों, प्राकृतिक और जैविक खेती के दिशा-निर्देशों और तरीकों, जैविक खेती प्रथाओं, मिट्टी की उर्वरता और खाद प्रबंधन, जीवामृत की तैयारी और उपयोग, कृषि में भौतिक और रासायनिक प्रबंधन विधियों, एकीकृत कीट प्रबंधन ,जड़ी-बूटियों का काढ़ा तैयार करना, सिंचाई प्रबंधन और विभिन्न फसलों में पानी की मात्रा का उपयोग (ड्रिप और स्प्रिंकलर सिंचाई पद्धति) आदि के बारे में जानकारी दी। ।साथ ही ग्लोबल वार्मिंग के पहलुओं और कृषि पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव के बारे में विस्तार से बताया गया। दोपहर के भोजन के बाद दोपहर के सत्र को फिर से शुरू किया गया, जिसमें फॉक्सटेल बाजरा की खेती और जलवायु लचीला कृषि में इसके मूल्यवर्धन पर आर.बी.के. के लिए आत्मा प्रौद्योगिकी प्रबंधक डॉ वीके ज्योतिर्मई द्वारा पहली प्रस्तुति दी गई। उन्होंने फॉक्सटेल बाजरा और ज्वार, जल उपयोग और भारत में विभिन्न फसलों के क्षेत्र, उच्च उपज वाली किस्मों, सर्वोत्तम प्रबंधन प्रथाओं और फॉक्सटेल बाजरा के बीज गुणन, फॉक्सटेल बाजरा में बीज प्रमाणीकरण के लिए क्षेत्र मानक, फॉक्स टेल बाजरा की किस्में जैसे SiA 3085, SiA 3156 और SiA 3088. बीज उत्पादन के लिए सर्वोत्तम मौसम के विशेष संदर्भ में आंध्र प्रदेश के भूमि उपयोग मानचित्र के बारे में विस्तार से वर्णन किया। इसके बाद, श्री एस. वेंकट राव, एसडीए, एपीसीएनएफ द्वारा "जेडबीएनएफ में चार पहियों और गैर परक्राम्य" पर एक और प्रस्तुति दी गई। उन्होंने प्रतिभागियों को जेडबीएनएफ के भीजामृतम, जीवामृतम, आचदान और वापसा के लिए चार मुख्य पहियों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने प्राकृतिक खेती, इसके उपयोग और मानव जीवन में महत्व के बारे में भी बताया। श्रीमती के धन्यवाद प्रस्ताव से कार्यक्रम का समापन हुआ। टी अनुषा। डॉ. इल्हाम बानो, वैज्ञानिक-बी ने भी कार्यक्रम के संबंध में कुछ शब्द बोले और प्रतिभागियों सहित अतिथियों को उनकी सक्रिय भागीदारी के लिए धन्यवाद दिया। डॉ. इल्हाम बानो द्वारा एफआरसीसीई की ओर से प्रतिभागियों के बीच सब्जियों के बीज की 10 किस्मों का वितरण भी किया गया। किसान बहुत खुश थे और उन्होंने पूरे उत्साह के साथ भाग लिया। उनके सभी प्रश्नों का भी अतिथियों ने धैर्यपूर्वक समाधान किया। कार्यक्रम में कुल 42 किसानों ने भाग लिया। एमपीडीओ हॉल के प्रवेश द्वार पर "क्षेत्रम - प्राकृतिक उत्पादों से स्वास्थ्य" द्वारा सभी जैविक उत्पादों और खेत में और साथ ही घरेलू उद्देश्यों के लिए उपयोग किए जाने वाले प्राकृतिक उत्पादों के साथ एक स्टाल की व्यवस्था की गई थी। कुछ प्राकृतिक उत्पाद प्रतिभागियों और मेहमानों द्वारा खरीदे गए थे।